Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 5, April-2019, ISSN 2230-7540

इतिहास में कार्य-कारण सम्बन्ध तथा सिद्धान्तो का अध्ययन

Krishan*

M.A. in History, UGC Net, Rohtak, Haryana

शोध सारः इतिहास एक अत्यन्त ही महत्त्वपूर्ण विषय है। इसका अध्ययन हमें वर्तमान में अतीत वेफ महत्त्व को बताता है तथा भविष्य वेफ लिये हमें नई धरोहर देता है। मानव जाति आज जितनी प्रगति कर चुकी है, उसका आधार वह अतीत ही है जहाँ से उसे ज्ञान मिला है। मनुष्य वेफ लिये इतिहास का ज्ञान बहुत उपयोगी है। भारतीय सभ्यता संसार की सबसे अधिक पुरानी सभ्यता है। इसे चीनी एवं यूनानी सभ्यता की तुलना में अधिक प्राचीन स्वीकार किया जाता है। प्राचीन समय से भारत को कई बार उत्थान और पतन का सामना करना पड़ा, इसलिए प्राचीन भारतीय इतिहास-लेखन में कई बड़े अन्तराल दिखाई पड़ते हैं। फलतः प्राचीन भारतीय इतिहास का अध्ययन सरल नहीं है। इतिहास में कार्य-कारण का अत्यधिक सम्बन्ध है। कारण के अभाव में किसी घटना का होना कदाचित सम्भव नहीं है। कारण व परिणाम एक-दूसरे के पूरक हैं। इस शोध-पत्र में इतिहास में कार्य-कारण सम्बन्ध तथा सिद्धान्तो के अध्ययन पर प्रकाश डाला गया है।

मुख्य शब्दः इतिहास, सभ्यता, कार्य-कारण सम्बन्ध तथा सिद्धान्त।

----------X----------

इतिहास में कोई भी घटना अकारण नहीं होती है और प्रत्येक कारण का कुछ प्रभाव भी होता है। प्रारम्भिक समय में इतिहासकार और विद्वान घटना के कारणों को महत्त्व नहीं देते थे क्योंकि वे उन्हें ईश्वर की इच्छा में हस्तक्षेप मानते थे परन्तु कारणों की अनिवार्यता को समझा गया है क्योंकि वे भविष्य के कार्यों के एक महत्त्वपूर्ण मार्गदर्शक स्वीकार कर लिये गये हैं। प्रारम्भ में इतिहासकार केवल घटनाक्रम पर अपना ध्यान केन्द्रित रखते थे, जैसे युद्ध कब और कहाँ हुआ और उसमें कितने लोग मारे गये और सेनाओं की योजना किस प्रकार की थी। अब चूँकि इतिहासकार का दृष्टिकोण मूल्य आँकलन पर आधारित हो गया है अतः घटना के कारणों की ओर विद्वानों का ध्यान आकर्षित होने लगा है।

इतिहास में कार्य-कारण का अत्यधिक सम्बन्ध है। कारण के अभाव में किसी घटना का होना कदाचित सम्भव नहीं है। विभिन्न विद्वानों ने इस सन्दर्भ में अपने मत व्यक्त किये परन्तु इस तथ्य को सभी ने एक मत से स्वीकार किया कि किसी भी कार्य में कारणों का होना आवश्यक है। अतः किसी भी घटित घटना के सम्बन्ध को स्पष्ट करने के लिए कार्य-कारण सम्बन्धों की विवेचना आवश्यक है। इतिहासकार का कारण और तथ्य से अत्यन्त निकट सम्बन्ध होता है और इतिहासकार अपनी व्याख्या के अनुसार कारणों को क्रमबदता प्रदान करता है। ऐतिहासिक दृष्टि से भी तथ्यों में कारणों की चयन प्रक्रिया ही इतिहास है। आधुनिक वैज्ञानिक इतिहासकारों के अनुसार, कारणों की व्याख्या में कल्पना की भी महत्त्वपूर्ण भूमिका होनी चाहिए।

कारण व परिणाम एक-दूसरे के पूरक हैं। कारणों में अन्तर होने पर परिणाम में अन्तर का होना भी स्वाभाविक है। जिस प्रकार अत्यधिक शीत का परिणाम हिमपात होता है, उसी तरह मानसून के कारण अत्यधिक वर्षा होती है। कार्य-कारण के अनेक सिद्धान्त हैं और प्रत्येक सिद्धान्त तर्वफसंगत प्रतीत होते हैं। इनमें निम्नलिखित सिद्धान्तों पर प्रकाश डालना यहाँ समीचीन होगा।

दैविक योजना

इस सिद्धान्त के समर्थकों का विश्वास है कि इतिहास में भाग्य की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। समस्त प्राचीन सभ्यताएँ जैसे इज्पिशियन, बेवीलोनियन और ग्रीक का इस सिद्धान्त में विश्वास है। प्रत्येक धर्म चाहे वह हिन्दू, इस्लाम, ईसाई और चीनी सभी ने इस सिद्धान्त का समर्थन किया है। इन सब

www.ignited.in

धर्मों के मानने वालों का विश्वास है कि सभी राजा, नायक, पादरी और समाज के बुद्धिवादी कई घटनाओं में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं लेकिन ऐसी ही बहुत-सी घटनाएँ होती हैं जो ईश्वर की इच्छा से घटित होती हैं। इस प्रकार वे भगवान का मानव के कार्यों में प्रत्यक्ष हस्तक्षेप स्वीकार करते हैं। ये इतिहासकार यह मानते हैं कि प्रत्येक घटना का कोई कारण होता है और वे अपने ढंग से उस कारण का वर्णन करते हैं और जहाँ वे घटना से सम्बन्धित कोई कारण नहीं ढूँढ़ पाते हैं, वे उसे ईश्वरीय घटना मान लेते हैं। प्रारम्भिक समय में अधिकांश विद्वानों ने इस सिद्धान्त को स्वीकार कर लिया था चूँकि समाज पुरोहित वर्ग के द्वारा शासित होता था। पूर्व और पश्चिम में यह सिद्धान्त अधिक मान्य व लोकप्रिय था जिसका प्रमुख कारण धर्म में विश्वास था। विद्वान ईश्वरीय शक्ति में अंधविश्वास रखते थे और चर्च का उनके सामाजिक जीवन पर नियन्त्रण था। साथ ही अशिक्षा और अज्ञान के कारण इस सिद्धान्त को महत्त्व प्राप्त हुआ था, परन्तु वर्तमान समय में यह विश्वास किया जाता है कि प्रत्येक घटना का कोई कारण होता है और उसके घटित होने में व्यक्ति में महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है।

बुद्धिवादी सिद्धान्त

17वीं और 18वीं शताब्दी में लोगों में जागृति आने लगी थी और इस काल में समाज में बुद्धिवाद का उत्थान हुआ। अनेक विद्वानों, इतिहासकारों और चिन्तकों ने घटनाओं के घटित होने में दैविक योजना का बहिष्कार किया। उन्होंने मानव के विकास में ईश्वर के संलग्न होने में असहमति प्रकट की। उन्होंने मानव की ओर अपना ध्यान आकर्षित किया तथा उसकी भूमिका पर विशेष बल दिया। इतिहासकारों ने घटनाओं के वर्णन में बुद्धिवादी तरीके को अपनाना प्रारम्भ किया। लॉक का मत है कि व्यक्तियों में परस्पर प्रेम, राष्ट्रीय समाज की प्रभावोत्मक विशेषता थी और उसकी नागरिक संस्था तर्वफ एवं उनकी स्वतन्त्रता, अधिकारों और विशेषाधिकारों को सुरक्षित रखने की इच्छा से प्रेरित थीं। फ्रांसिसी दार्शनिकों की भी मान्यता थी कि इतिहास स्थिर ज्ञान की प्राप्ति और तर्वफ की विजय के माध्यम से मानव मात्रा सम्पूर्णता की ओर बढ़ रहा है।

राष्ट्रीय सिद्धान्त

19वीं शताब्दी के प्रारम्भ के साथ-साथ कारण से सम्बन्धित एक अन्य समस्या को स्वीकार किया गया। वह राष्ट्रवाद की भावना थी जिसने 19वीं शताब्दी में ठोस आधार ग्रहण कर लिया था। राष्ट्रवाद की भावना के कारण अनेक लड़ाइयाँ व युद्ध हुए ताकि शक्तिशाली राष्ट्र दुर्बल राष्ट्रों पर अपना आधिपत्य स्थापित कर सवेंफ। निःसन्देह अतीत काल में भी राष्ट्रों के मध्य राष्ट्रवाद की भावना विराजमान थी जो निरन्तर अपनी सीमाओं के विस्तार हेतु संघर्ष किया करते थे। इनके अतिरिक्त राष्ट्रीय चरित्रा एवं संस्था ने भी ऐतिहासिक घटनाओं के घटित होने में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की। वस्तुतः ऐतिहासिक रूप से स्थापित सामाजिक, और राजनीतिक संस्थाओं के द्वारा ही राष्ट्रीय चरित्रा का निर्माण एवं विनाश हुआ।

वैज्ञानिक सिद्धान्त

रेंक के नेतृत्व में 19वीं शताब्दी में एक नवीन ऐतिहासिक सिद्धांत का उदय कई इतिहासकारों में दृष्टिगोचर हुआ जिन्होंने इस बात पर बल दिया कि इतिहास का वर्णन बिना कार्य-कारण-सम्बन्ध के भी किया जा सकता है। उसका यह मत था कि इतिहास का सर्वोत्तम दर्शन कदाचित कारण के सिद्धांत पर आधारित नहीं है अपितु घटना और परिणाम पर केन्द्रित है किन्तु उन्होंने यह व्यक्त करने का प्रयास नहीं किया कि किस प्रकार ऐतिहासिक तथ्यों और घटनाओं के समूह में से कोई सत्य को जानकर उसका अनुसरण कर सकता है।

मानव-भाव का सिद्धान्त

इस सिद्धान्त के अन्तर्गत यह स्वीकार किया गया है कि मनुष्य में मानव-भाव प्रमुख प्रेरित करने वाली शक्ति है। इस सिद्धान्त के समर्थक इस पर बल देते हैं कि मानव-भाव कई महत्त्वपूर्ण घटनाओं में प्रभावोत्पादक भूमिका अदा करते हैं। इस सिद्धान्त के समर्थकों में हीगल, काम्टे और सिमन प्रमुख हैं। प्रारम्भिक समय में महान् व्यक्तियों ने अक्सर भावनात्मक रूप से व्यक्ति को उत्तेजित करने का प्रयास किया था और उन्हें ऐसे कार्य करने के लिए प्रेरित किया ताकि घटना उनकी इच्छानुसार घटित हो सके। वर्तमान समय में भी हमारे राजनीतिक व धार्मिक नेता इसी कार्य को अन्जाम दे रहे हैं।

मार्क्स का सिद्धान्त

इस सिद्धान्त का प्रतिपादक कार्ल मार्क्स था जिसने ऐतिहासिक घटनाओं के घटित होने की भौतिकवादी व्याख्या को प्रस्तुत किया। उसके सिद्धान्तों ने सम्पूर्ण विश्व को प्रभावित किया। वर्तमान में यह सिद्धान्त समाज को भी अपने प्रभाव के अन्तर्गत ला रहे हैं। कार्ल मार्क्स ने इस तथ्य पर बल दिया कि वह कर्म जिसका उत्पादन के साधनों पर

www.ignited.in

नियन्त्रण होता है, वह आथक क्षेत्र में प्रभाव रखता है। उसकी मान्यता थी कि वर्तमान संघर्ष केवल वर्ग संघर्ष है और शक्तिशाली लोग अन्य सभी वर्गों पर शासन करते हैं क्योंकि उनका सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक शक्तियों पर नियन्त्रण होता है। कार्ल मार्क्स का यह भी मत है कि इस वर्ग संघर्ष का अन्त केवल श्रमिक वर्ग की विजय से ही सम्भव है।

ऐतिहासिक स्कूल

19वीं शताब्दी के अन्त ने एक नवीन ऐतिहासिक स्कूल के अस्तित्व को जन्म दिया जिसका विकास जर्मनी में हुआ। विलहम डिथे इस पद्धति के प्रमुख प्रणेता थे। इस पदति के मानने वालों का विश्वास था कि इतिहास एक निरन्तर प्रक्रिया है। ऐतिहासिक प्रक्रिया सदैव जारी रहती है और इतिहासकार का यह दायित्व है कि घटना के कारण का पता लगाये जो विश्व के विभिन्न भागों में घटित हो रही हैं। इस पद्धति के मानने वाले विद्वानों की यह धारणा है कि इतिहास का तात्पर्य मूल्य की खोज है और इतिहासकार को अपने दृष्टिकोण के अनुसार घटनाओं की व्याख्या करने का प्रयास करना चाहिए ताकि वह लोगों का उचित मार्गदर्शन कर सके। दूसरी ओर उसे घटना के कारणों को भी खोजना चाहिए और उन्हें अपने समय के लोगों के सम्मुख प्रस्तुत करना चाहिए। इस पदति के प्रणेताओं ने मूल्य आंकलन के क्षेत्रा में विशेष योगदान प्रदान किया।

बुद्धिवादी स्कूल

इस पदति के मानने वाले विद्वान इस तथ्य से सहमत नहीं हैं कि इतिहास महत्त्वपूर्ण घटनाओं के केवल तिथिक्रम का अध्ययन है और बड़े आदमियों के कार्यों का वर्णन मात्रा है। साथ ही इतिहास केवल बौदिक जनों, राजाओं और सम्राटों की जीवनी का अध्ययन भी नहीं है। उनकी मान्यता थी कि इतिहास के अन्तर्गत हम अतीत की सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक जानकारी की अपेक्षा करते हैं और उसके कारणों की भी जानकारी की इच्छा रखते हैं। उनकी यह भी मान्यता है कि इतिहास किसी घटना के घटित होने का कोई एक कारण नहीं होता अपितु उसमें अनेक कारणों का योगदान होता है।

राष्ट्रीय चरित्र

राष्ट्रीय चरित्र को भी बुद्धिवादी सिद्धान्त में आने के बाद कार्य एवं घटना के कारण के रूप में महत्त्व प्राप्त होने लगा। इस सिद्धांत के प्रमुख प्रतिपादक हर्डर और माइक्लेट हैं। इसके अनुसार राष्ट्रीय चरित्रा की जानकारी के आधार पर ही व्यक्ति के चरित्रा को अनुमानित किया जा सकता है तथा व्यक्तिगत चरित्रा के आधार पर राष्ट्रीय चरित्रा निर्धारित करना सम्भव है। भारत में निवास करने वालों की एक प्रमुख विशेषता यह है कि वे अपने पुरातन विश्वासों और परम्पराओं को न तो शीघ्र त्यागते हैं और न ही नवीन को ग्रहण करते हैं। जबकि यूरोपीय त्रुटीपूर्ण मान्यताओं को त्यागने व नवीनता को ग्रहण करने के लिए सदैव तत्पर रहते हैं। अतः स्पष्ट है कि भारतीयों एवं यूरोपीय लोगों के राष्ट्रीय चरित्र में पर्याप्त अन्तर है परन्तु सत्य यह है कि किसी भी व्यक्ति के गुणों और दोषों का तुरन्त अनुमान लगाना सम्भव नहीं है। अतः इस आधार पर राष्ट्रीय चरित्र का अनुमान लगाना सम्भव नहीं है।

परिस्थितियों का सिद्धान्त

प्रसिद्ध इतिहासकार ओकशाट की मान्यता है कि परिस्थितियों की समुचित व्याख्या में ही कारण के स्पष्ट प्रभाव को ढूँढ़ा जा सकता है। अतः कार्य-कारण सम्बन्धों का उचित वर्णन जब परिस्थितियों के सन्दर्भ में किया जाता है तब घटना के कारण स्वरूप परिस्थितियाँ महत्त्व प्राप्त करती हैं।

विवेक का सिद्धान्त

इतिहास लेखन में इतिहासकार का स्वविवेक भी अत्यन्त सहायक होता है। अपने विवेक के अनुसार ही वह मुख्य एवं गौण कारणों में अन्तर करता है। उसके व्यक्तिगत दृष्टिकोण को प्रभावित करने में जाति, धर्म, क्षेत्रीयता एवं राष्ट्रीयता की भी महत्त्वपूर्ण भूमिका रखती है। वस्तुतः इन कारकों के प्रभाव से मुक्त होकर की गयी व्याख्या ही सर्वस्वीकृत होती है।

स्पष्ट है कि कार्य-कारण के अनेक कारणों के वर्णन के बाद भी अभी इस समस्या का हल सम्भव नहीं हुआ। इतिहासकार को अत्यन्त सावधानीपूर्वक कारण के स्थान पर कारणों शब्द का प्रयोग करना चाहिए और इस मान्य सिद्धान्त को तोड़ते हुए कुछ विशिष्ट शब्दों 'उद्देश्य', 'अवसर', 'घटना', 'साधन' और 'तात्पर्य' का जहाँ सम्भव हो प्रयोग करना चाहिए। हर प्रकार से इस समस्या के प्रति निरन्तर जागृति वांछनीय है...और यथार्थता पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

डॉ. मानिक लाल गुप्त-, मध्यकालीन भारत का इतिहास- अटलांटिक पब्लिशर्स

अनिता वर्मा- 'शिक्षा और समाज' – गुलीबाबा पब्लिश हाउस प्राइवेट लिमिटेड।

दिलीप – आधुनिक भारत का सांस्कृतिक इतिहास - अटलांटिक पब्लिशर्स

विमल कुमार, कविता सैनी - भारतीय अर्थव्यवस्था का इतिहास गुलीबाबा पब्लिश हाउस प्राइवेट लिमिटेड

Corresponding Author

Krishan*

M.A. in History, UGC Net, Rohtak, Haryana

krishan01257250539@gmail.com